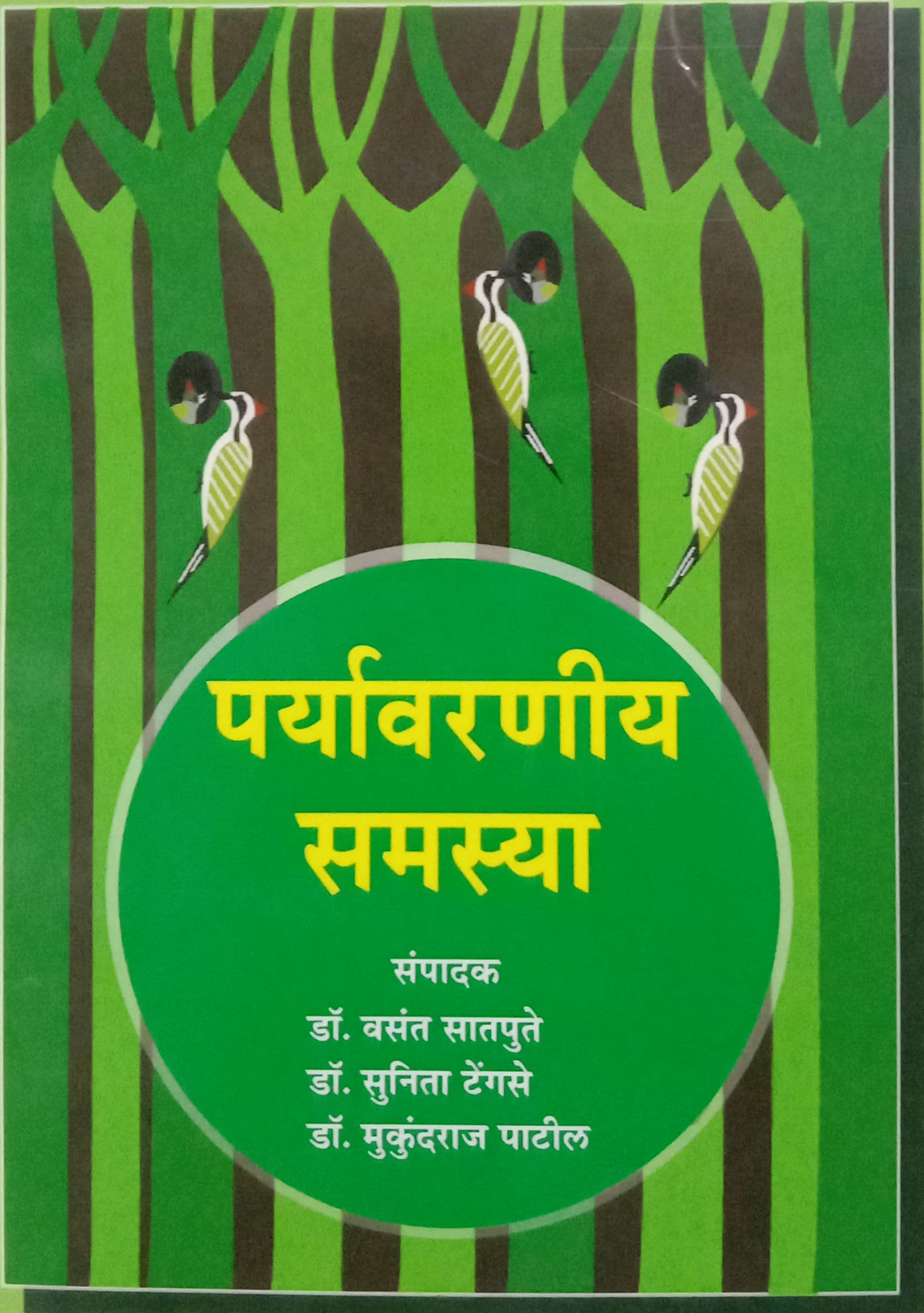

पर्यावरणीय समस्या

संपादक

डॉ. वसंत सातपुते

डॉ. सुनिता टेंगसे

डॉ. मुकुंदराज पाटील

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

ISBN: 978-81-944856-9-8

पर्यावरणीय समस्या | डॉ. वसंत सातपुते, डॉ. सुनिता टेंगसे, डॉ. मुकुंदराज पाटील

Paryavarniy Samasya | Eds. - Dr.Vasant Satpute, Dr Sunita Tengse, Dr Mukundraj Patil

© *संपादक*

प्रकाशक
डॉ. कल्याण गांगर्डे,
न्यू मॅन पब्लिकेशन, परभणी- ४३१४०१
मोबा. ८३२९०००७३२
Email : nmpublication@gmail.com
Web: www.newmanpublication.com

मुद्रक
स्नेहल प्रिंटर्स अंड बुक बायंडर्स, परभणी
मोबा. ९७३०७२१३९३

मुखपृष्ठ
डॉ. कल्याण गांगर्डे, परभणी

अक्षरजुळणी
स्नेहल प्रिंटर्स अंड बुक बायंडर्स, परभणी

प्रथमावृत्ती : २०२०

मूल्य. ₹ २९९/-

Late Ramesh ... College ... Dist. Parbhani

२२.जागतिक तापमान वाढ :कारणे,परिणाम व उपाययोजना /
जयदीप सोळूंके १०९
२३.प्रदुषण : प्रकार, कारणे, परिणाम आणि उपाय / **नरसिंग आ.पवार** ११६
२४.व्यावसायीक पर्यावरण काळाची गरज / **बी. आर शिंदे** १२१
२५.व्यवसायावर पर्यावरणाचे परिणाम करणारे घटक
पवार बी. एस १२४
२६.पर्यावरण जनजागृती काळाची गरज /**अंभुरे एस. डी.** १२८
२७.ध्वनिप्रदूषण परिणाम आणि उपाय / **मानसी स. सरदेशपांडे** १३२
२८.जागतिक तापमान वाढीचा कृषी क्षेत्रावर होणारा परिणाम /
शिवकुमार के. पांचाळ १३५
२९.घनकचरा व्यवस्थापनातुन पर्यावरण संवर्धन / **सुनिता आ. टेंगसे** १३९
३०.पर्यावरण शिक्षण आणि त्याची आवश्यकता
दिपक द. जोगडे, ए. के. फाजगे , ए. पी. बर्वे १४४
३१.प्रदूषण: प्रकार, कारणे, परिणाम / **वसंत पां. सरवदे** १५०
३२.शाश्वत विकासातून पर्यावरण संवर्धन / **अशोक का. जाधव** १५४
३३.जलप्रदूषण आणि आरोग्य /**एस.जी. अन्सारी** १६०
३४.आंतरराष्टीय पर्यावरणीय वाटाघाटी / **आंधळे बी व्ही** १६३
३५.ध्वनी प्रदुषण : कारणे, परिणाम व उपाय / **मा. धो. कच्छवे** १६७
३६.औष्णिक विदयुत प्रकल्प आणि पर्यावरण /*सुरेवाड एस.जी* १७२
३७.पर्यावरण संवर्धन काळाची गरज /*सोमवंशी मुक्ता (गंगणे)* १७६
३८.जैवविविधतेचा एक चिकित्सक अभ्यास / **सुनंदा भद्रशेटे** १८१
३९.पर्यावरणाची हानी : एक गंभीर समस्या /*गोलेकर के.एम.* १८४
४०.मराठी साहित्यातील नैसर्गिक पर्यावरण / **श्रीहरी दा.चव्हाण** १८८
४१.21 वी सदी की कविता में महानगरिय,पर्यावरणीय विमर्श /
दिग्विजय टेंगसे १९२
४२.वाङ्मयीन पर्यावरण / **सखाराम बा. कदम** १९९
४३.भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण / **व्यास सी.पी.** २०३
४४.असंतुलन का असमंजस एवं इक्कीसवीं सदी /कुलकर्णी वनिता २०६
४५.पर्यावरणावर प्रदुषणचे होणारे परिणाम /
जी.एन.सोनटक्के, एस.एस. गव्हाणे २१०

Lala Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth
Dist. Parbhani

६४

असंतुलन का असमंजस एवं इक्कीसवीं सदी

कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा, कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय,सोनपेठ
जि.परभणी महाराष्ट्र –431516

मनुष्य और प्रकृति दोनों ही शब्दों में निहित गूढ भाव प्रारम्भ से ही मनीषियों के लिए चिन्तन का विषय रहें हैं। पूर्व तथा पश्चिम दोनों ही क्षेत्रों में उस पर व्यापक शोधात्मक चिन्तन हुआ है । पूर्व विषेशतया भारत में जहाँ ये अध्येता ऋचाओं व श्रुतियों के दृष्टा ऋषि तथा दर्शनकार मनीषी रहे हैं, वहाँ इस क्षेत्र में पश्चिम में प्लेटों, एपीक्यूरस, हेगल, ब्रेडले, बर्गसा, बोन्साके, स्पेन्सर जैसे चिन्तकों का विश्वविख्यात समूह रहा है ।

वर्तमान समय में इस शोध की एक अन्य धारा निःसृत हुई है, जिसे वैज्ञानिक चिन्तन की धारा कहा जा सकता है, प्राच्य ऋषियों का उद्देश बाहय – प्रकृति से अन्तः प्रकृति में प्रवेश कर तथा उसे पार कर आनन्द पाना था । पश्चिमी दर्शनिकों में अधिकांश का लक्ष्य बाहय प्रकृति के साथ अन्तः प्रकृति का सम्बन्ध स्थापित कर अन्तकरण में रमण कर सुख की प्राप्ती था । जबकि आज वैज्ञानिक चिन्तन में यह लक्ष्य बाहय प्रकृति से अधिकाधिक उपलब्ध कर मात्र उसका उपभोग करना रह गया है । भोग की इसी प्रकृति ने शोषण का क्रम प्रामम्भ किया । इस क्रम के अनुसार प्रकृति के प्रत्येक घटक को जिस किसी तरह निचोड लेना ही एक मात्र उद्देश रह गया है । इसमें दोषी कोई व्यक्ति अथवा समाज का अंग विशेष नहीं हैं, अपितु चिन्तन की अपूर्णता तथा मानव व प्रकृति के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को न समझ पाने की विवशता है ।

वुल्फगेंग क्लाजविस –"एन्वायरमैण्ट क्राइसिंस नामक पुस्तक में लिखते हैं कि पैल्योलिथिक रेवोल्यूषन के समस से, जब से कृषक समाज अपने अस्तित्व में आया, बन कृषि योग्य भूमि में अधिक से अधिक परिवर्तन हुए हैं । जब से वनों की उपयोगिता निर्माण कार्यो के लिए समझी गई, तब से वनों को काटना एवं जलाना बडी निर्दयता और अदूरदर्शिता पूर्वक तथा तीव्र गति से हुआ है। इस कारण विस्तृत प्राकृतिक क्षेत्र परिवर्तित हो गये हैं एवं पयावरण के असंतुलन का संकट सामने आ रहा है। निर्वनीकरण, औद्योगिकरण, भूगर्भ के साधनों का उत्खनन भूक्षरण, जनजीवन में अस्तव्यस्तता, आधुनिकता की दौड ने जहाँ अचिन्त्य को बढावा दिया है, वहाँ मनुष्य को प्रकृति से पृथक कर एक व्यापक असंतुलन भी पैदा कर दिया है । इससे प्रदूषण जन्य शारीरिक रोंगो में बढोत्तरी हुई है। औद्योगिक क्रान्ति ने मानवी पर्यावरण और स्वास्थ्य को अपार क्षति पहुँचाई है। मनुष्य जाति यह लगभग भूल गई है कि जीवित निकायों से किस प्रकार बरताव किया जाय । मनुष्य जीवित निकायों के लिए विचार और क्रिया पद्धति का तकनीकी व्यवहार ही अपनाता है । इस प्रकार की नीति एवें क्रिया पद्धति अकथनिय क्षति का कारण बनती है ।

आजकल पृथ्वी में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो मनुष्य के द्वारा किसी न किसी प्रकार प्रदूषित न हो रहा हो । आधुनिक मानव अपनी तकनीकी

Late Ramesh ... A.C.S. College ... Dist. Parbhani ... Pathri

उपलब्धीयों के प्रलोभन के कारण वही करता है, जिससे उसकी प्रकृति से खुशी मिले और कुछ प्राप्त करे । इससे वह अपने नैसर्गिक पर्यावरण को पूर्णतया बदल देता है । जल वन और भूमि के स्त्रोतों का दोहन करता है तथा क्रमशः कृत्रिम मशीनी दुनियॉ का निर्माण करता है ।

पर्यावरण को सुरक्षित रखकर ही मनुष्य अपने आपको बचा सकता है । पर्यावरण संबंन्धी जो वर्तमान संकट चहुँ और दिखाई पडता है वह विभिन्न क्षेत्रो में इस सभ्यता की गलत नीतिंयों का ही दुष्परिणाम है यदि आगे इन नीतियों में परिवर्तन नहीं हुआ तो अन्य सभ्यताओं की भॉति वर्तमान सभ्यता का सर्वनाश समुपस्थित होना असम्भव भी नहीं । इन दिनों प्यार्वरण असंन्तुलन के कारण मौसम बडी तीव्र गति से विश्व के प्रायः हर हिस्से में अपना रंग बदलता दिखाई पड रहा है और असंतुलन जैसी स्थिती उत्पन्न हो रही है । वैज्ञानिक, शिक्षशास्त्री पर्यावरण प्रेमी सभी ने मनुष्य और वर्तमान समाज व्यवस्था के इसके लिए दोषी ठहराया और कहा है कि इनकी गलत नीतियों का ही यह दुष्परिणाम है । उन सभी ने एक स्वर से इसे स्वीकारा है कि अब यदि आगे भी इस स्थिती को और अधिक गम्भीर बनने से रोका नहीं गया तो मानवी विनाश सुनिश्चित है । इस सदर्भ में लार्ड रिची काल्डर लिखते है कि . ''पुरातन काल में अतिविकसित सभ्यतायें अपनी ही गलतियों के कारण बर्बाद हो गई । उन्होंने या तो लालच या लापराही दिखाई अथवा अशक्तता अपनायी । इस प्रकार उनकी स्वयं की कमजोरियॉ ही उन्हे ले डूबीं ।''1 उनका कहना है कि यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वही भूले दूहरायी गई, तो हमारी इस सभ्यता का भी परिणाम पूर्व जैसा ही होगा । इसलिए वे इस संदर्भ में सावधान करते हुए पहले से ही किसी उपयुक्त रोकथाम पर विचार करने की सलाह देते है पिछले दिनों सुविधा सम्बर्धन की दिशा में बहुत काम हुआ है । आर्थिक, बौध्दिक और वैज्ञानिक प्रयासों में जो प्रगति हुई है उसे देखते हुए यह परिणाति होनी चाहिए थी कि, सर्वत्र सुख–शान्ति के आधार विकसित हुए दीख पडते और प्रगति का लाभ सर्वसाधारण को मिलने से उल्लास और उत्साह बिखरता दीख पडता भूलों का सिलसिला भी चलता रहा है । जिसके कारण बढती हुई कठिनाइयों पर ही सहज नजर जाती है कहीं हम प्रगति के साथ–साथ अवनति को तो अधिक उत्साह पूर्वक नहीं अपना रहे है ? कहीं कमाने से अधिक गॅवाने वाला पलडा भारी तो नहीं कर रहे हैं ?

प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रतिकुल प्रभाव का मूल कारण मनुष्य की वह मूलभूत इच्छा है, जिसके अन्तर्गत वह अपने विकास और विस्तार की बात सोचता है । एक ऐसा विकास जो अनन्त हो, ऐसा विस्तार जो अपरिणित हो । उसकी इसी इच्छां का परिणाम है कि आज वस्तुओं का उत्पादन और उपभोग आकाश चूम कर रहा है, तथा जनसंख्या वृध्दि एवं पर्यावरण – असंतुलन की भयंकरता प्रत्यक्ष है । यदि विकास का यह तरीका बदला नही गया तो यह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सर्वनाश उपस्थित कर सकता है । दृष्टि पसारकर देखने पर डरावनी भीषिकायें प्रमुखता से सामने आ खडी होती हैं । औद्योगीकरण के साथ–साथ बढता प्रदूषण, वायु और जल में विष घोल रहा है । उर्जा के अधिक उपयोग से अन्तरिक्ष का बढता तापमान ध्रुव पिघलाने, समुद्र में ज्वार

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

आने, ओजोन परत फटने जैसी चुनैतियॉ प्रस्तुत करता है । बडी हुई आवश्यकता ये भूतल की खनिज सम्पदा का दोहन कर रही हैं और संकेत कर रही हैं कि संचय के चुक जाने पर जो शुन्य सामने आएगा उसकी पूर्ति न हो सकेगी। तब क्या होगा ? कचरे से कैसे निपटा जाएगा ? तेजी से कटते जंगलो ने जो भूक्षरण बढाया उसकी भरपाई कैसे संभव होगी ? इन सबसे बडी समस्या दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढती हुई जनसंख्या की है । जिसके कारण प्रगति को पीछे धकेल कर अवगति आगे बढ जाती है । इस अभिवृध्दि के कारण बढती हुई हर स्तर की मॉग को पूरा करने के लिए कितने साधन किस प्रकार कहॉ से जुट सकेंगे ? शिक्षा बढ रही है, पर साथ ही बेकारी, बेरोजगारी उसे लॉघ कर आगे पहुँच रही है । शहरों की घिचपिच बढ रही है । गॉवों में प्रतिभा पलायन हो रहा हैं । नीति शिक्षण के लिए धार्मिक–सामाजिक राजनैतिक मंच आदर्षवाद के पक्ष में कुछ कम नही कहते धर्म क्षेत्र के प्रवक्ततो मानो इसी सबके लिए जीवित और समर्पित मानने हैं । इतना सब होते हुए भी कहीं कुछ ऐसी भूल रह जाती हैं, जिसकी तुलना फूंटे घडें में से पानी बह जाने के तुल्य हैं । अमेरिका के बैरी कॉम्नर इस संकट को समाजिक बताते हुए लिखते हैं कि, ''वर्तमान संकट न तो किसी प्राकृतिक विपत्ति का परिणाम है, न मनुष्य के गलत क्रियाकलाप का । पर्यावरण प्रदूशण इसलि नही'' फैला कि मनुष्य गन्दगी –पसंन्द जीव है, न इस कारण कि आबादी की इन दिनों असाधारण वृध्दि हुई है, वरन् इसका मूल कारण मानवी समाज में सन्निहित है । जिस ढंग से समाज ने इस धरती के संसांधनों से उपलब्ध सम्पदा पर अधिकार जमाना चाहा, उनका वितरण और उपयोग किया वही आज की पर्यावरण समस्या के प्रधान कारण है ।''2 हम जिस संसार में रहते है, वहॉ जीवन जीने के लिए स्वच्छ आकाष, स्वच्छ पृथ्वी, स्वच्छ हवा तथा स्वच्छ जल का होना नितान्त आवश्यक है । इनके स्वच्छ न रहने कारण प्रदूषण है । ''यातायात एवं संसार की कर्कष ध्वनि ने शब्द–जगत् को प्रदूषण से मुक्त नही रखा है । ऐसी स्थिति में मानव जाति एक खतरनाक दुनियां में जीने को विवष हो रही हैं, इसका प्रभाव मानव के शरीर, मन, बुध्दि तथा आचरण को दूषित करने में लगा हुआ हैं, जिससे विकृतियां जन्म ले रही हैं । आज जनता असाध्य बीमारियों से ग्रस्त हो बीमार जिन्दगी जी रही हैं, अभिशप्त सा मन अशांत हो रहा हैं तथा ध्वनि प्रदूषण से पागलपन बढता जा रहा हैं और सहन शक्ति दुर्बल होने जा रही हैं ।''3 बढता हुआ प्रदुषण भावी पीढी को अभिशप्त जीवन के सिवा कुछ नही दे पायेंगा तब यह हमारा विकास किसके लिए होगा ? महानगरों के व्यापक विस्तार ने इस दूषण को जन्म दिया है । औद्योगिकरण क्षेत्र की चिमनियों से उडता हुआ काला धुहा, सडको पर रेंगते यातायत के साधनों के डीजल–पेट्रोल की बदबू साथ पानी में गंदगी का प्रभाव । इस तीव्र गति से बढते हुए प्रदुषण के कारण प्राकृतिक वातावरण समाप्त सा होने जा रहा है । हम यंत्र के माध्यम से श्वास लेने को विवश होने जा रहे है ।

भारत में पर्यावरण विषयक शिक्षा और जागरूकता के विकास के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं । पर्यावरण और वन मंत्रालय जुलाई 1986 से राष्ट्रीय पर्यावरण चेतना कार्यक्रम चला रहा है। 1994–95 में मंत्रालय ने इस

उद्देश्य की सिध्दि के लिए 2200 संस्थाओं को वित्तीय सहायता दी । भारतीय वन्य जीवन संस्थान, देहरादून वन अधिकारियों और वन प्रबध में सेवारत कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए कई कार्यक्रम चलाता है ।''4

पर्यावरण सन्तुलन में वृक्ष वनस्पतियों का जितना योगदान है उतना प्रकृति के अन्य किसी भी घटक का नही है । दिन–प्रतिदिन वातावरण में घुलते जहर के परिशोधन तथा जीवन के परिपोषण के लिए उपयागी तत्वों के अभिवर्धन में ये मूक पर सजीव संरक्षण की भूमिका निभाते है ।''इनके महत्वपूर्ण उदात्म अनुदानों को देखकर ही पुरातन काल में दृष्टा ऋषियों ने वृक्ष–वनस्पतियों के पोषण और संरक्षण के देव आराधना जितना पुण्य फल देने वाला माना था । वृक्षारोपन को दान, पुण्य, तीर्थ, उपासना और साधना के समकक्ष माना जाता था ।यह मान्यता अकारण नहीं भी । वृक्ष–वनस्पतियों के असंख्य अनुदानों के कारण ही उन्हे इतना अधिक महत्व मिला हुआ था ।''5 अच्छे बुरे वातावरण से अच्छी बुरी परिस्थितियॉ जन्म लेती है और वातावरण का निर्माण पूरी तरह मनुष्य के हाथ में है वह चाहे उसे स्वच्छ, स्वस्थ और सुन्दर बनाकर स्वर्गिय परिस्थितीयों का आनंद ले अथवा उसे विषाक्त बनाकर स्वयं अपना दम घोटे । ''भारतीय वनों की दुर्दषा ने पर्यावरण की और से इस देश के वासियों को चुनौती दे रखी है ।''6

टपने देश में जल प्रदूषण को दूर करने न केवळ हमारी सरकार ही प्रयत्नशील है, बल्कि देश के विभिन्न भागों में कार्यरत स्वंयसेववी संस्थाओं द्वारा जल प्रदुषण रोकने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है, सरकारी कानूनों एवं माध्यमों की अपेक्षा हमारी ये स्वंयसेवी संस्थाए जल प्रदूषण निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । आत प्रत्येक गांव में एसी स्वंयसेवी संस्थाओं की आवश्यकता है जो जल प्रदुषण की रोकथाम एवं जल संरक्षण में अपनी भूमिका निभाकर जल को प्रदूषित होने से बचाकर राष्ट्र के स्वास्थ की रक्षा कर सकें''7 प्रकृति ने लाखो करोडो वर्षो से इस भूमंडल को सॅजोया है । प्रकृति को संरक्षण दिया जाय तो वह हमे भी संरक्षण प्रदान करेगी । सृष्टा की संतुलन व्यवस्था पर यदि विश्वास किया जा सके तो यह भी सोंचा जाना चाहिए कि जो दूरदर्शी विवेक शीलता का अवलंब लेगा, वह इक्कीसवीं सदी का अरूणोदय अपने इन्ही चर्मचक्षुओं से देख सकेगा । फिर उसे असंतुलन असमंजस नहीं होगा ।

संदर्भ :–

1. फारेन एफेयर्स – पत्रिका – लार्ड रिची काल्डर भाग 48 नं 2 – 1970 पृ. 207–220
2. दि क्लोजिंग सर्कल – बैरी काम्नर – 1979 पृ. 178
3. हिन्दी व्याकरण एवं निबंध – आचार्य भारती – पृ. 23–24
4. आजादी के पचास साल – विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त – पृ. 136
5. युग – परिवर्तन कैसे और कब ? – प.श्रीराम शर्मा – आचार्य वाङमय – पृ. 2.7
6. भारत में ग्रामीण विकास – रामजी यादव पृ. 117
7. कुरूक्षेत्र – मासिक पत्रिका जुलै 2004 पृ. 14

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani